

तारीख
हुक्म

हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

24/10/08

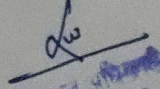
पत्राकी प्रकृष्ट। वादी के पुत्र
श्री सुन्देव सिंह ने चार्ल्स डार्विन राजेंद्र
शर्मा के प्रमोदलतामा से पेशावकी
इस प्रपत्र के अदेश के दिनांक
10/08/08 पेश किया और प्रपत्र
पर काम की प्रार्थना की।

कावे श्री राजेंद्र शर्मा ने
अपनी कथामें प्रपत्र के
लक्षणों के दोहराने हुए कहा
कि वादी दयाल सिंह को
अपने जीवनकाल में हमेशा बल
व्यक्त सम्पादितों की कलीयत
प्रार्थी सुन्देव सिंह के नाम
लिखकर दिनांक 24.10.2005
को उपरोक्त जहाजपुर के
थका में जीवित करवाया था।
दयाल सिंह (वादी) को मृत्यु
दिनांक 24/10/08 को ले जाने
से उसकी कलीयत का प्रभाव
में आ गया। जिसमें प्रार्थी

तारीख
हुकम

उन सभी सम्पत्तियों का मालिक
हो था। बाद की तारीख में
वादी अपने जीवनकाल में लगातार खर्च
करते रहे हैं और चला जा रहा है
जिससे विवाह के कारणों से वादी की
सिद्धि में हानि हो गई है। वादी को पक्षकार
बनाया जावे। अन्यथा वादी के हित पर
प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रा.पत्र स्वीकार
किया जावे।

पत्रावली व प्रा.पत्र का इकलौता
दस्तावेज। बाद की तारीख में वादी
फ्यालफिट के नाम खातेदारी में न होने
पर विवाह के नाम खातेदारी में भी
कतः कसबत का प्रभाव इस वाद
की विवाह के कारणों पर नहीं हो
सकता है। विवाह के कारणों पर अपना
कसबत वादी के जीवनकाल के समय से
ही बनाया है, जबकि ~~क~~ कसबत
के सम्बन्ध में कोई दस्तावेज प्रा.पत्र के
साथ संलग्न नहीं है। अतः केवल कसबत
के आधार पर सिद्धांत कोई सबूत
नहीं है, प्रा.पत्र स्वीकार किया जाना
अव्याजित व सिद्धि अनुकूल नहीं है।


जज

तारीख
हुक्म

हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

राम शालाजी, स्टाम्प
की तारीख

प्राची यदि वाद में पक्षकार बनता
चाहता है तो दरग़ाहिर के विधिक
वाहिकान के साथ निम्नानुसार कायम
मुक़ाम स्थापन हेतु प्रा.पत्र पेश
करना चाहिए था।

अतः प्रा.पत्र सारहीन व
विधि अनुसार नहीं होने से प्रा.पत्र
स्वीकार योग्य नहीं होने से प्रा.पत्र
अकर्तव्य आदेश। निम्न 10 CPC
अर्थात् दिया जाय कि तथा वाद
में वादी दरग़ाहिर मुक़ाम की लख
विह जाति उपदिना की मूक़ाम लेने
के दरग़ाहिर (वादी) के सभी विधिक
वाहिकान द्वारा निम्नानुसार कायम
मुक़ाम प्रा.पत्र पेश नहीं के कारण
अर्थात् दिया जाय कि पत्रावली
कैसल नुमाए होना नम्बर से 5म
है। वाहिल दफ़्तर में।

निर्णय करे इजलास मुनाया
जया।

